ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016

Indian Streams Research Journal

डिजिटल मीडिया युग में 'कल्याण' (गीताप्रेस,गोरखपुर की धार्मिक–आध्यात्मिक पत्रिका 'कल्याण' की प्रासंगिकता)

डॉ. रजनीश कुमार चतुर्वेदी
पूर्व शोध छात्र, म.मो.मा. हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

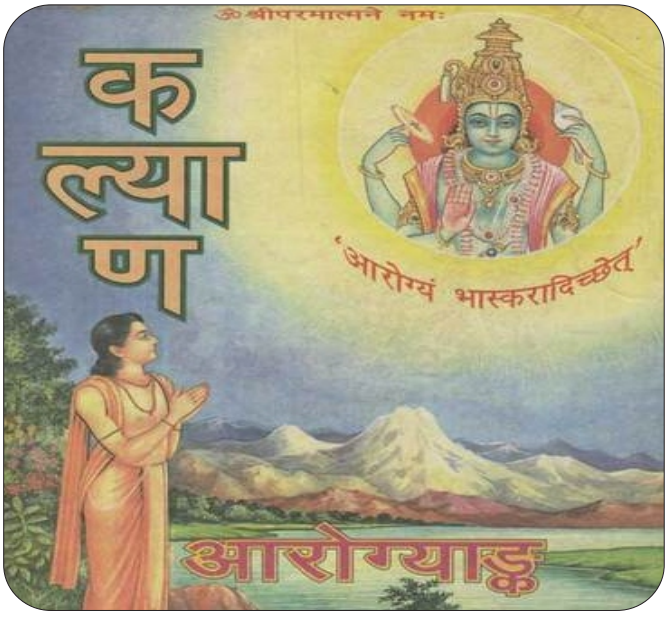

प्रस्तावना :–

1926 में, जब भारत की लगभग सभी पत्र–पत्रिकाएँ स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय थीं, सेठ जयदयाल गोयन्दका और 'भाईजी' हनुमान प्रसाद पोद्दार ने देशवासियों में राष्ट्रीयता के साथ ही अध्यात्म का संचार करने के प्रयास अन्तर्गत मासिक पत्रिका 'कल्याण' का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस पत्रिका से मानव कल्याण का एक मार्ग तो मिला ही साथ ही पत्रकारिता को भी एक दिशा मिली। आज भी यह पत्रिका पत्रकारिता के माध्यम से मानव कल्याण के अभियान का ध्वज वाहक बनी हुई है। इसके अतिरिक्त आज पत्रकारिता के जिस विज्ञापन विहिन मॉडल की चर्चा हो रही है,'कल्याण' पिछले 90 वर्षों से उस नीति पर सफलतापूर्वक चल रहा है।

इस शोध निबन्ध में आध्यात्मिक भूख मिटाने वाली एवं धार्मिक पत्र–पत्रिकाओं में सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित गीताप्रेस,गोरखपुर की मासिक पत्रिका 'कल्याण' की निरन्तर चल रही यात्रा और पत्रकारिता के क्षेत्र में उसके अवदान का विश्लेषण किया गया है, जिससे इस विश्व प्रसिद्ध पत्रिका के वैशिष्ट्य का एक परिचय का एक परिचय प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त डिजिटल मीडिया के दौर में इस पत्रिका की प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है।

की वर्डस– 'कल्याण', धार्मिक–आध्यात्मिक पत्रकारिता, हनुमान प्रसाद पोद्दार,गीताप्रेस,

1– 'कल्याण' : परिचयात्मक सन्दर्भ

1.1– प्रकाशन की भूमिका

कल्याण' आमतौर पर धार्मिक–आध्यात्मिक पत्रिका के रूप में विख्यात है। यदि हम हिन्दी पत्रकारिता के शुरूआती दौर के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि प्रारम्भ से ही पत्रकारिता के क्षेत्र में धार्मिक–आध्यात्मिक पत्रकारिता को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उस समय प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं में धर्म और अध्यात्म सम्बन्धी सामग्री का प्रकाशन अवश्य होता था भले ही वे पत्र–पत्रिकाएँ राजनीतिक या सामाजिक श्रेणी की ही क्यों न हों। उस वक्त प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में कुछ धार्मिक पत्रिकाएँ भी थीं परन्तु किसी न किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय से जुड़े होने के कारण मात्र उसी वर्ग तक सीमित थीं और अन्य धर्मों या सम्प्रदाय का विश्वास उन्हें नहीं प्राप्त हो सका और उनका स्वरूप आध्यात्मिक नहीं हो सका।[1]

1.2– 'कल्याण' का प्रवर्तन

'कल्याण' के प्रकाशन के प्रेरणास्रोत घनश्याम दास बिड़ला थे। 1926 में दिल्ली में मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का वार्षिक अधिवेशन था। इस अधिवेशन का स्वागत भाषण जयदयाल गोयन्दका के अनुरोध पर हनुमान प्रसाद पोद्दार ने तैयार किया था जो घनश्याम दास बिड़ला को पसंद आया और उन्होंने पोद्दार जी से कहा–"भाई! तुम लोगों के विचार कहाँ तक ठीक हैं, इसकी आलोचना हमें नहीं करनी

है। पर इनका प्रचार तुम लोगों के द्वारा समाज में हो रहा है। जनता उन्हें दूर तक मानती भी है। यदि तुम लोगों के पास अपने विचारों और सिद्धान्तों का एक पत्र होता तो तुम लोगों को और भी सफलता मिलती। तुम लोग अपने विचारों का एक पत्र निकालो।"[2] घनश्याम दास बिड़ला का यही सुझाव 'कल्याण' के आविर्भाव का कारण बना।

'कल्याण' का प्रथम अंक अगस्त 1926 में हनुमान प्रसाद पोद्दार के सम्पादन में मुम्बई के वेकंटेश प्रेस से सत्संग भवन द्वारा प्रकाशित हुआ। दूसरे वर्ष के दूसरे अंक से यह गीताप्रेस,गोरखपुर से छपने लगा।

1.3 – गीता प्रेस

गीता प्रेस की स्थापना 1923 में सेठ जयदयाल गोयन्दका ने किया था। गोयन्दका जी को गीता बहुत प्रिय थी। वे घूम–घूम कर गीता का प्रचार करते थे। गोयन्दका जी ने इसके लिए गीता की अपने भावानुसार व्याख्या कर कलकत्ता के वणिक प्रेस से गीता की पाँच हजार प्रतियाँ छपवायीं जिसके मुद्रण में अनेक अशुद्धियाँ थीं। अतः इन्होंने इस हेतु अपना प्रेस स्थापित करने का निश्चय किया। 1922 में 'गोविंद भवन कार्यालय नाम से एक सोसायटी 'वेस्ट बंगाल सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट' के अन्तर्गत पंजीकृत कराया गया। इसी सोसाइटी के द्वारा गीता प्रेस की स्थापना 1923 में गोरखपुर में हुई।[3]

यहाँ से गीता के कई छोटे–बड़े संस्करण प्रकाशित होने लगे। बाद में 1927 से 'कल्याण' भी यहीं से प्रकाशित होने लगा। वर्तमान समय में गीता प्रेस अपनी सस्ती और धार्मिक पुस्तकों के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। यह न केवल हिन्दी बल्कि अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में सस्ती धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित करता है।

1.4 – 'कल्याण' के संस्थापक सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार

'भाई जी' के नाम से प्रसिद्ध हनुमान प्रसाद पोद्दार का नाम धार्मिक– आध्यात्मिक पत्रकारिता के क्षेत्र में शीर्षस्थ स्थान रखता है। 'कल्याण' एवं पोद्दार जी एक दूसरे के पर्याय माने जाते हैं।'कल्याण' के संपादक के रूप में उन्होने न केवल भारत वरन् समस्त विश्व के अध्यात्म प्रेमियों को अपने संपादन–कौशल एवं लेखन–पटुता से प्रभावित किया।

17 सितम्बर 1892 को शिलांग में जन्में भाई जी के पूर्वज रतनगढ़ (राजस्थान) के रहने वाले थे और व्यापार के लिए वहां रहने लगे थे।

भाई जी की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं हुई तो भी ये कई भाषाओं के बड़े विद्वान बने। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भाई जी पूर्णतः सशस्त्र क्रान्ति में विश्वास रखने वाले युवकों के दल में शामिल हो गये। 16 जुलाई 1916 को इन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। बंगाल के शिमलापाल में नज़रबन्दी के जीवन में इन्होंने कठोर साधना की और अध्यात्म की ओर झुक गये। 1918 में जेल से मुक्ति के बाद ये कांग्रेस के अधिवेशनों में शामिल होते रहे। 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन के बाद उनकी विचारधारा सर्वथा बदल गई और ये पूर्ण रूप से अध्यात्म साधना तथा धर्म प्रचार में लग गए। 'कल्याण' का संपादन कार्य इसी धर्म प्रचार का एक माध्यम बना।[4]

पोद्दार जी की ईश्वर के ऊपर अविचल आस्था थी। उनका सम्पूर्ण जीवन पूजामय था। वे जगत के प्रत्येक चर–अचर में भगवान का ही प्रतिबिम्ब देखते थे। उनकी इस निष्ठा के मूल में उनका भागवत दर्शन था, जिसके अनुसार जब जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय में वही भगवान विद्यमान हैं तो उनकी किसी भी विभूति से क्यों द्वेष किया जाय? उनका मानना था कि मानव जीवन का एक मात्र उद्देश्य भगवद्–प्राप्ति होना चाहिए।[5]

पोद्दार जी ने 'कल्याण' का 45 वर्षो तक संपादन किया। आज भी 'कल्याण' की संपादन नीति उनके ही द्वारा निर्धारित नियमों पर आधारित है। पोद्दार जी ने 'कल्याण के अतिरिक्त 'महाभारत' मासिक एवं अंग्रेजी पत्रिका 'कल्याण कल्पतरू' का भी संपादन किया। बहुआयामी व्यक्तित्व वाले पोद्दार ने विपुल मात्रा में साहित्य सृजन भी किया। इनकी इन्ही सेवाओं के चलते इन्हें 'भारत रत्न' देने का भी विचार किया गया परन्तु स्वयं पोद्दार जी ने मना कर दिया।[6] पोद्दार जी का देहान्त 22 मार्च 1971 को हुआ। भाई जी ने 'कल्याण' के सम्पादन हेतु कोई पारिश्रमिक नही लिया था।[7]

1.5 – कल्याण के अन्य संपादक

भाई जी के देहान्त के बाद चिम्मन लाल गोस्वामी 'कल्याण' के संपादक बने। इसके बाद स्वामी रामसुखदास, मोतीलाल जालान ने 'कल्याण' का संपादन किया। पाण्डेय रामनारायण दत्त शास्त्री ने भी 'कल्याण' का संपादन किया, हालाँकि इनका पद नाम सह–सम्पादक ही रहा। वर्तमान में 'कल्याण' के सम्पादक राधेश्याम खेमका हैं।

1.6 – 'कल्याण' और महात्मा गांधी

'कल्याण' के प्रकाशन के पूर्व पोद्दार जी गांधी जी से मिले और इस पत्रिका के सम्बंध में सुझाव माँगा। गांधी जी ने दो सुझाव दिया–

1.बाहरी कोई विज्ञापन मत छापना

2.पुस्तकों की समालोचना मत छापना।[8]

'कल्याण' में आजतक इस नियम का पालन होता चला आ रहा है । 'कल्याण' के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी इस पत्रिका में प्रथम अंक से ही नियमित रूप से छपते रहे। हालाँकि भारत विभाजन के समय अपनी संपादकीय टिप्पणियों में पोद्दार जी ने गांधी जी का तीखा विरोध किया था।[9]

2– 'कल्याण' के प्रकाशन का लक्ष्य

'कल्याण' के प्रकाशन का लक्ष्य पोद्दारजी ने अपने प्रथम सम्पादकीय में स्पष्ट कर दिया।

2.1–'कल्याण' के प्रथम सम्पादकीय में पोद्दार जी ने लिखा–

कल्याण की आवश्यकता सबको है। जगत् में कौन ऐसा मनुष्य है जो अपना कल्याण नहीं चाहता है ? इसी आवश्यकता का अनुभव कर आज यह 'कल्याण' भी प्रकट हो रहा है। शुभ, मंगल,शिव और भद्र आदि कल्याण के पर्यायवाची शब्द हैं परन्तु इनका अर्थ करने में अपने अपने उद्देश्य के अनुसार बड़ा अन्तर डाल दिया जाता है। कोई स्त्री हैं पुत्र, धन, मान और बड़ाईयों की प्राप्ति को शुभ मानते हैं तो कोई इन सबको त्याग कर निर्जन प्रदेश में निवास करना ही शुभ समझते हैं, कोई पर–धन–अपहरण में ही अपना मंगल मानते हैं तो कोई परार्थ अर्थ के उत्सर्गको मंगल समझते हैं, इस प्रकार अपनी अपनी रूचि के अनुसार लोग कल्याण का भिन्न–भिन्न अर्थ किया करते हैं, वास्तविक कल्याण किस वस्तु में है इसका एक मत से निर्णय आजतक नहीं हो सका है। परन्तु त्रिकालज्ञ ऋषि मुनियों ने, महात्माओं ने और जगत के बड़े–बड़े धीमान् पुरूषों ने अपनी दिव्य दृष्टि से "परमात्मा की आज्ञानुसार शुभ कर्म करते हुए अन्त में परमात्मा की प्राप्ति कर लेने को ही" परम कल्याण माना है। इसी को ब्रह्मवेत्ता महापुरूष मोक्ष कहते हैं, इसी को भक्तो ने अपनी रसीली वाणी से श्यामसुन्दर का "अनन्य प्रेम" कहा है और यही सबका एक मात्र सम्पादनीय परम पुरूषार्थ है! यही एक ऐसा विषय है, जिसमें सबका समान अधिकार है, इसमें स्त्री–पुरूष और ब्राह्मण–शूद्र का कोई भेद नहीं! धन–ऐश्वर्य रूप–गुण, विद्या–कला और वर्ण–जाति आदि से यहां कुछ भी सम्बन्ध नहीं। ...सम्पादक का विचार है कि इस "कल्याण" के द्वारा यथासम्भव उन प्रातः स्मरणीय ऋषि–मुनियों और महापुरूषों की दिव्य वाणी का ही प्रचार किया जाय जो अपने अलौकिक तेज से पथभ्रष्ट पथिकों को कल्याण के सुन्दर मार्ग पर लाने में समर्थ हैं! स्वलिखित लेखों में भी यथा साध्य महापुरूषों के वचनों को ही आधार बनाने का विचार है। मनुष्यों के विचारों का कार्य में परिणत होना प्रेरक प्रभु के आधीन है उस मंगलमयकी इच्छा से जो कुछ भी हो रहा है सो सभी कल्याण है, उसका कोई भी कार्य कल्याण से रहित नहीं होता। विज्ञ पाठक और पाठिकाएं अनुग्रहपूर्वक अपने प्रेम का वह बल दें कि जिससे इस "कल्याण" का यह तुच्छ सम्पादक भी प्रभु की प्रत्येक क्रिया को कल्याणमय समझने के योग्य बन सके।[10]

2.2– इस सम्पादकीय निवेदन से 'कल्याण' के प्रकाशन एवं लक्ष्य के संबंध में निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं–

2.2.1.'कल्याण' का प्रकाशन विश्व और मानव मात्र के कल्याणार्थ हुआ।

2.2.2.'कल्याण' मानव जीवन के एकमात्र लक्ष्य भगवत्प्राप्ति के लिए सभी को प्रेरित करने का कार्य करेगा।

2.2.3.'कल्याण' सन्त–महात्माओं एवं महापुरूषों की दिव्य वाणी का प्रचार करते हुए लोगों को उसी के अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित करेगा।

2.2.4.देश, जाति, धर्म आदि संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर पूरे संसार को कल्याण मार्ग अर्थात् भगवत्प्राप्ति के मार्ग पर चलने में सहायता देगा।

2.2.5.'कल्याण' अर्थ लाभ को ध्यान में न रखकर जन सामान्य के धार्मिक–आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए कार्य करेगा।[11]

3–'कल्याण' में प्रकाशित सामग्री

'कल्याण' में प्रकाशित इसके उद्देश्य और नियम में स्पष्ट रूप से कहा जाता है– 'भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म और सदाचार समन्वित लेखों द्वारा जन–जन को कल्याण के पथ पर अग्रसारित करने का प्रयत्न करना इसका एकमात्र उद्देश्य है।' इसके साथ ही यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाता है– 'भगवद्भक्ति, भक्त चरित, ज्ञान, वैराग्यादि ईश्वर परक, कल्याण मार्ग में सहायक, अध्यात्म विषयक, व्यक्तिगत आक्षेप रहित लेखों के अतिरिक्त अन्य विषयों के लेख ''कल्याण'' में प्रकाशित नहीं किए जाते हैं।'[12]

आध्यात्मिकता को प्रमुख स्थान देने के बावजूद 'कल्याण' ने सामयिक जीवन के लौकिक पक्ष की उपेक्षा नहीं की है। 'कल्याण' ने लोक जीवन को प्रभावित करने वाली राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक विचारधाराओं की निर्भीक समीक्षा कर पाठकों के पथ निर्देश का सतत् प्रयास किया है।

विभिन्न स्तम्भों के अतिरिक्त 'कल्याण' में प्रकाशित सामग्री प्रमुखतः चार श्रेणियों में विभक्त की जा सकती हैं–

3.1.1– भक्ति, दर्शन, अध्यात्म आदि– 'कल्याण' का प्रकाशन जिस उद्देश्य से हुआ उसमे यह स्वाभाविक ही है कि इसमें भक्ति और अध्यात्म सम्बन्धी निबन्धों की बहुलता रहे। 'कल्याण' के प्रथम अंक से ही यह परम्परा चली आ रही है। 'कल्याण' के धार्मिक–आध्यात्मिक निबन्धों में लोकशिक्षण का तत्व भी विद्यमान होता है। 'कल्याण' के आध्यात्मिक लेखों का प्रमुख उद्देश्य आमजन को आध्यात्मिकता की ओर मोड़ना होता है। इन लेखों में सांसारिक व्यवहार एवं अध्यात्म के मध्य सामंजस्य स्थापित करने की शिक्षा दी जाती है।

3.1.2– साहित्य – 'कल्याण' में प्रकाशित साहित्य में साहित्यिक लेख, कहानी, कविता, एकांकी नाटक एवं अन्य विविध सामग्री शामिल है। 'कल्याण' का साहित्यिक पक्ष काफी समृद्ध रहा है। अपने प्रारम्भिक दौर में इसमें कहानी, कविताएं प्रचुर मात्रा में छपती थीं, परन्तु इस समय इनकी संख्या काफी कम हो गयी है।

3.1.3– राजनीतिक विशय– 'कल्याण' की नीति प्रारम्भ से ही राजनीतिक विषयों से दूर रहने की है। हाँलाकि पोद्दार जी ने अपने संपादन काल में विभिन्न राजनीतिक विषयों पर टिप्पणी की है परन्तु आमतौर पर 'कल्याण' में राजनीतिक विषयों का अभाव है। मात्र दो ऐसे मुद्दे रहे हैं जिन पर 'कल्याण' ने मुखर होकर टिप्पणी की। पहला देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात होने वाले साम्प्रदायिक दंगो के एवं दूसरा रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवादके सन्दर्भ में। इन दोनो का सम्बन्ध भी सीधे धार्मिक होने की वजह से इन पर टिप्पणियाँ की गयी है।

3.1.4– अन्य– भक्ति, अध्यात्म और साहित्य के अतिरिक्त 'कल्याण' में विविध विषयों पर भी सामग्री प्रकाशित होती है। इनमें प्रमुख रूप से सामाजिक समस्याओं, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक, समसामयिक विषयों, गोरक्षा, नारी, बालक, प्राणिहिंसा आदि विषय प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण, प्रदूषण जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर 'कल्याण' में प्रचुर मात्रा में सामग्री प्रकाशित होती है।

3.2– 'कल्याण' के प्रमुख स्तम्भ–

'कल्याण' में अनेक स्तम्भ प्रकाशित हुए। इनमें से कुछ बन्द हो गये और कुछ नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। इसके प्रमुख स्तम्भ इस प्रकार है–'कल्याण', 'पढो, समझो और करो' 'परमहंस विवेक माला', 'विवेक वाटिका', 'परमार्थ पत्रावली', 'परमार्थ की पगडंडियाँ', 'साधकों के प्रति', 'सत्संग वाटिका के बिखरे सुमन', 'काम के पत्र', 'मनन करने योग्य', 'भक्त गाथा','व्रतोत्सव पर्व', 'साधनोपयोगी पत्र'।

'कल्याण' में प्रकाशित सामग्रियों का यह संक्षिप्त विवेचन इसके महत्व के दिग्दर्शन के लिए पर्याप्त है। इससे 'कल्याण की कर्मकाण्डी पत्र की छवि का खंडन होता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि 'कल्याण' एक जीवन्त पत्रिका है जिसकी दिशा आध्यात्मिक है। अभ्युदय और निःश्रेयस का अद्भुत समन्वय 'कल्याण' में दिखायी देता है जो इसे अन्य पत्रिकाओं से पृथक करता है।

4–'कल्याण' की सम्पादन नीति

'कल्याण के प्रकाशन के सम्बन्ध में गांधी जी के दो सुझावों को मानने के अतिरिक्त पोद्दार जी ने 'कल्याण के सम्पादन हेतु जो नीतियाँ बनायीं उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं–

4.1–सभी मतों–सम्प्रदायों के उत्तम सिद्धान्तों का आदर करना।
4.2–किसी भी मत या सम्प्रदाय का खण्डन करने वाले लेखों को स्थान न देकर उसके लोकहितकारी तत्वों को महत्व प्रदान करना।
4.3–दूसरे मत या सम्प्रदाय के जो छिद्र हैं, उनको न तो देखना और न ही प्रकाश में लाने का प्रयास करना।
4.4–सदाचार अर्थात् चारित्रिक उन्नति को सर्वोच्च स्थान देना।
4.5–कर्म, उपासना तथा ज्ञान मार्ग का तत्व ग्रहण कर उनकी मर्यादा की रक्षा को महत्व देना।
4.6–'कल्याण' ने कर्मफल, पुनर्जन्म एवं तथा अवतारवाद के सिद्धान्त को स्वीकार किया।
4.7–'कल्याण' ने समदर्शन के सिद्धान्त का समर्थन किया, समवर्तन का नहीं।
4.8–मानवीय गुणों के प्रसार में निरन्तर संलग्न एवं सचेष्ट रहना।
4.9–'कल्याण' ने पुरूषार्थ–चतुष्ट्य का समर्थन करने के साथ ही साधन चतुष्ट्य (विवेक, वैराग्य, षड्सम्पत्ति और मुमुक्षत्व) को महत्व दिया।
4.10–'कल्याण' मे ऐसे लेखों को स्वीकार नहीं करने का सिद्धान्त बनाया गया जिससे आपस में द्वेष फैलता हो, आलस्य आता हो, अकर्मण्यता का समर्थन होता हो, भगवान के प्रति किसी रूप में अश्रद्धा उत्पन्न होती हो तथा दुराचार का समर्थन होता हो चाहे कर्म के नाम पर हो, ज्ञान के नाम पर हो अथवा भक्ति के नाम पर।
4.11–'कल्याण' ने यथासम्भव जीवित व्यक्तियों के चित्र और उनका जीवन वृत्त प्रकाशित न करने का नियम बनाया।
4.12–'कल्याण' को सामान्यतया दलगत राजनीति से अलग रखा गया।
4.13–'कल्याण' ने भारतीय संस्कृति के विरूद्ध कुछ भी न छापने के सिद्धान्त का पालन किया।
4.14–'कल्याण' ने आचरण से असंपृक्त कोरे दार्शनिक सिद्धान्त का कभी समर्थन नहीं किया।
4.15–'कल्याण ने वर्ग–संघर्ष के स्थान पर मूल्य–संघर्ष को महत्व दिया।[13]

5–'कल्याण' के विशेषांक

'कल्याण' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है इसके विशेषांक कल्याण के आविर्भाव के समय ही पोद्दार जी के मानस में उसके प्रकाशन की एक विशिष्ट रूपरेखा निर्मित हो गई थी और वह थी–प्रतिवर्ष एक विशेषांक तथा ग्यारह साधारण अंको का प्रकाशन।[14]

यह क्रम अब तक चला आ रहा है। प्रायः वर्ष का दूसरा और तीसरा अंक भी विशेषांक का विस्तार होता है। 'कल्याण' के ये विशेषांक अपने विषय के विश्वकोश माने जा सकते हैं। इन विशेषांकों मे सम्बन्धित विषय के सभी पक्षों पर केन्द्रित सामग्री प्रकाशित होती है। पहले वर्ष में कोई विशेषांक प्रकाशित नहीं हुआ। दूसरे वर्ष से इनका प्रकाशन शुरू हुआ। 'कल्याण' द्वारा प्रकाशित विशेषांक इस प्रकार हैं–

भगवन्नामांक, भक्तांक, गीतांक, रामायणांक, श्रीकृष्णांक, ईश्वरांक, शिवांक, शक्ति अंक, योगांक, श्रीवेदान्तांक, संत अंक, मानसांक, गीता तत्वांक, साधनांक, श्रीमद्भागवतांक, सं0 महाभारतांक, सं0 वाल्मीकी रामायाणांक, सं0 पद्म पुराणांक, गो अंक, सं0 मारकण्डेय–ब्रह्मपुराणांक, नारी अंक, उपनिषद अंक, हिंदू संस्कृति अंक, स्कन्द पुराणांक, भक्ति चरितांक, बालक अंक, सं0 नारद–विष्णु पुराणांक, संतवाणी अंक, सत्कथा अंक, तीर्थांक, भक्ति अंक, मानवता अंक, सं0 देवी भागवतांक, सं0 योगवशिष्ठांक, सं0 शिव पुराणांक, सं0 ब्रह्मवैवर्त पुराणांक, श्रीकृष्ण वचनामृतांक, भगवन्नाम महिमा एवं प्रार्थना अंक, धर्मांक, श्रीरामवचनामृतांक, उपासना अंक, परलोक, और पुनर्जन्मांक, अग्निपुराण–गर्ग संहिता अंक, अग्निपुराण–गर्ग संहिता–नरसिंह पुराणांक, श्री रामांक, श्री विष्णु अंक, श्री गणेश अंक, श्री हनुमान अंक, श्री भगवतकृपा अंक, सं. वराहपुराणांक, सदाचार अंक, श्री सूर्यांक, निष्काम कर्म योगांक, भगवततत्वांक, श्री वामन पुराणांक, चरित्र निर्माणांक, श्री मत्स्य पुराणांक (पूर्वाध), श्री मत्स्यपुराणांक (उत्तरार्ध), संकीर्तनांक, शक्ति उपासना अंक, शिक्षांक, पुराण कथांक, देवतांक, योग तत्वांक, सं0 भविष्य पुराणांक, शिवोपासनांक, श्रीराम भक्ति अंक, गो–सेवा अंक, धर्मशास्त्रांक, कूर्मपुराणांक, भगवल्लीला अंक, वेद कथांक, सं0 गरूण पुराणांक, आरोग्य अंक, नीतिसार अंक, भगवत्प्रेम अंक, व्रत पर्वोत्सव अंक, देवी पुराण (महाभावगत) अंक, संस्कार अंक, अवतार कथांक, श्रीमद् देवी भागवतांक (पूर्वाध), श्रीमद् देवी भागवतांक (उत्तरार्ध), जीवनचर्या अंक, दानमहिमा अंक, श्री लिंग महापुराणांक, भक्तमाल अंक, ज्योतिष तत्वांक, सेवा अंक,गंगा अंक।

विशेषांकों पर दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ विशेषांकों की पुनरावृत्ति हुई है।यथा – 'शक्ति अंक, एवं शक्ति उपासना अंक', 'गो अंक एवं 'गो सेवा अंक', 'श्रीरामांक' एवं 'श्री राम भक्ति अंक', 'गीतांक' एवं 'गीता तत्वांक', 'योगांक' एवं 'योग तत्वांक'। इसका कारण यह है कि जब इन विशेषांको का प्रकाशन किया गया तो कल्याण की प्रसार संख्या कम थी, जिस से कम लोग ही लाभान्वित हो सके थे। इसी लिए अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित करने के लिए कुछ लोकप्रिय विशेषांकों की विषयवस्तु पर केन्द्रित दूसरे विशेषांक प्रकाशित किये गए। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 'कल्याण' ने अपने विशेषांको के माध्यम से साधना एवं दर्शन के निगूढ़ तत्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य एवं संस्कृति के भण्डार में श्रीवृद्धि तो की ही है, भारतीय जनमानस को अपनी अपूर्व निधि से भी परिचित कराया है। यही वजह है कि 'कल्याण' के अधिकांश विशेषांको के कई संस्करण पुनर्मुद्रित होकर आज भी पाठकों के बीच पहुँच रहे हैं।

6–'कल्याण' का प्रतिबन्धित मालवीय अंक[15]

आम पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि विशुद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक सामग्री का प्रकाशन करने वाली पत्रिका 'कल्याण' पर भी एक बार सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा कर इसे जब्त किया गया था। वर्ष 1946 में 'कल्याण ने एक अतिरिक्त 13वाँ अंक निकाला जो

महामना मालवीय जी के देहान्त पर उन्हें श्रद्धांजली देने के लिए था। इसका नाम श्राद्धोपलक्ष्य अंक था जो 'मालवीय अंक' के नाम से चर्चित हुआ। इसके मुख पृष्ठ पर शंख और कोड़ा बना था। इसमें उस समय पूर्व बंगाल में हो रहे दंगो पर काफी सामग्री छपी थी। इसके अधिकांश लेख हनुमान प्रसाद पोद्दार ने लिखें थे। इसी अंक में मालवीय जी का अन्तिम पूरा वक्तव्य भी छपा है। इस अंक में एक बंगाली महिला का पत्र 'बगकन्या' की मर्मस्पर्शी अपील' शीर्षक से छपा जिसे सरकार ने आपत्तिजनक मानते हुए इसकी जब्ती के आदेश दे दिये। हालाँकि इसका कोई विशेष प्रभाव नही हुआ क्योंकि इस आदेश के पूर्व ही 'कल्याण' डाक द्वारा अपने अधिकांश ग्राहकों के पास पहुँच गया था।

7– 'कल्याण' की कुछ महत्वपूर्ण देन

'कल्याण' ने अपनी इस लम्बी यात्रा में आम पाठकों के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया उनमें से कुछ इस प्रकार है :–

7.1– पुराणों का प्रकाशन– 'कल्याण' द्वारा विशेषांकों के रूप में पुराणों के सस्ते और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराए गए हैं। इनमें से कई तो ऐसे पुराण हैं जो हिन्दी क्या संस्कृत में भी अप्राय्य हैं। 'कल्याण' के अनुसार मनुष्य पुराणों से बहुत कुछ सीख सकता है तथा अपने में श्रद्धा, विश्वास, आस्था, आस्तिकता और सात्विकता उत्पन्न कर सकता है। पुराणों के विशेषांकों के रूप में प्रकाशन के पीछे 'कल्याण' की यही दृष्टि रही है।[16]

7.2– रामचरित मानस–आज गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित 'रामचरित मानस' का पाठ सबसे प्रामाणिक और शुद्ध माना जाता है। इसको सर्वप्रथम 'कल्याण' में 13वें वर्ष के विशेषांक 'मानसांक'[17] के रूप में प्रकाशित किया। इसका पाठ सम्पादन आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी और चिम्मन लाल गोस्वामी ने किया। पाठ को प्रमाणिक बनाने हेतु इसमें गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित प्रति या सर्वाधिक निकट कही जाने वाली प्रति प्राप्त कर उसके आधार पर पाठ निर्धारित किया गया।

7.3– सम्पूर्ण श्रीमद् भागवत– 'कल्याण' ने 16वें वर्ष के विशेषांक के रूप में 'भागवतांक'[18] का प्रकाशन किया । जिसमें सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत का हिन्दी अनुवाद छपा है। इसके प्रकाशन के बाद तमाम पाठकों ने मूल संस्कृत में इसे छापने की सलाह दी क्योंकि मान्यता के अनुसार मूल भागवत को ही घर में रखना यर्थाथ कल्याणप्रद है। अतः अगले अंक में पूरा भागवत बेहद छोटे अक्षरों में 82 पृष्ठों में छापा गया। ऐसा पाठकों की आस्था का सम्मान करने के लिए किया गया।

7.4– नाम–जप का प्रचार– 'कल्याण' ने भगवन्नाम जप का प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'कल्याण' के प्रथम वर्ष में ही नाम–जप की सूचना निकाल कर लोगों से नाम–जप करने की प्रार्थना की गई। यह जप–यज्ञ प्रति वर्ष ढाई महीने का चलता है। लोग 'हरे राम' महामन्त्र का जाप करते हैं और निश्चित अवधि के बाद उसकी सूचना 'कल्याण' कार्यालय को भेजते हैं। इसे जोड़कर सब स्थानों के नाम एवं कुल जप की संख्या प्रतिवर्ष 'कल्याण' में प्रकाशित की जाती है।

8–'कल्याण' की लोकप्रियता के कारण

'कल्याण' की प्रथम वर्ष में ग्राहक संख्या 1600 थी। परन्तु एक ही वर्ष के पश्चात इसके प्रथम विशेषांक की संख्या 5000 हो गई और शीघ्र ही 6000 अंकों का दूसरा संस्करण प्रकाशित करना पड़ा।[19]आज इसकी ग्राहक संख्या 215000 हजार है।

कल्याण' की लोकप्रियता के अनेक कारण हैं, उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है–

8.1– कुशल सम्पादन नीति– 'कल्याण' की जो सम्पादन नीति पोद्दार जी ने बनायी, उसके चलते 'कल्याण' उसी प्रकार लोकप्रिय हुआ जिस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पादन वाली 'सरस्वती'। पोद्दार जी द्वारा स्थापित सम्पादन के सिद्धान्त आगे चलकर मील का पत्थर सिद्ध हुए जिससे 'कल्याण' के स्तरोन्नयन में बड़ी सहायता मिली।

8.2– विज्ञापन रहित पत्र– आज यह स्थापित धारणा है कि बिना विज्ञापन के कोई पत्रिका नहीं चल सकती लेकिन 'कल्याण' इस धारणा का खण्डन करता है। यह भी इसकी लोकप्रियता का एक महत्वपूर्ण कारण है।

8.3– सामग्री की उत्कृष्टता– 'कल्याण' में प्रकाशित सामग्री की उत्कृष्टता भी इसकी लोकप्रियता का एक महत्वपूर्ण कारण है। सामग्री के उत्कृष्टता होने की शर्त के कारण ही 'कल्याण' में वेदों का प्रकाशन नहीं किया गया क्योंकि पोद्दार जी के अनुसार वेदों के अभिज्ञ अधिकारी विद्वानों का अभाव है एवं वेदों के उपलब्ध अनुवाद स्तरीय नहीं है।[20]

8.4– उदार एवं समन्वयवादी विचारधारा– 'कल्याण' की उदार एवं समन्वयवादी विचारधारा भी इसकी लोकप्रियता का एक कारण है। 'कल्याण' के अनुसार सभी धर्म सम्प्रदायों का अन्तिम लक्ष्य परमतत्व की प्राप्ति है, भेद केवल साधना पद्धति एवं साधना मार्गों में है। अतः 'कल्याण' में सभी धर्म सम्प्रदायों के लेखकों और विचारकों को स्थान मिलता है।

8.5– सामग्री की विविधता– सामग्री की विविधता किसी पत्रिका के लिए अनिवार्य तत्व है। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखकर 'कल्याण' ने स्वयं को एकरसता से बचाया है। सामग्री वैविध्य भी 'कल्याण' की लोकप्रियता का कारण है।

8.6– प्रगतिशीलता– परम्पराप्रियता के साथ–साथ प्रगतिशील तत्वों को भी 'कल्याण' में स्थान दिया गया है। 'कल्याण' ने सनातन धर्म का समर्थन अवश्य किय परन्तु रूढ़िवादिता को प्रश्रय नहीं दिया।

8.7– विशेषांक– 'कल्याण' की महत्व स्थापना में इसके विशेषाकों का भी उल्लेखनीय योगदान है। ये विशेषांक अपने विषय के विश्वकोश के रूप में समादृत हुए। सामान्य पाठकों से लेकर शोधार्थियों तथा विशेषज्ञों तक के लिए ये अमूल्य ग्रन्थ साबित हुए हैं।

8.8– चित्र–'कल्याण' की लोकप्रियता में इसके चित्र भी सहायक हैं। चित्र निर्माण में लोकहित तथा मर्यादा का विशेष ध्यान रखा गया। राम–कृष्ण के लोकरक्षक रूप की ही प्रतिष्ठा की गयी, देवी के चित्र बने तो राक्षसों का वध करते हुए, कृष्ण की रासलीला पर अधिक चित्र नहीं बने, आदि। इस प्रकार गीता प्रेस की अपनी विशिष्ट शैली बनी जिसे चित्रों की 'गीता प्रेस शैली' की संज्ञा दी जा सकती है।

8.9– मूल्य निर्धारण की पारदर्शी नीति– 'कल्याण' द्वारा मूल्य बढ़ाने के समय पूरी पारदर्शिता के साथ अपने पाठकों के समक्ष उसके कारणों को रखा जाता था। पोद्दार जी के सम्पादन काल में मूल्य बढ़ाने के समय इसके सम्बन्ध में पूरा लेखा प्रस्तुत कर दिया जाता था।[21]

8.10– अल्प मूल्य– 'कल्याण' प्रारम्भ से ही अल्प मूल्य पर उपलब्ध होता रहा है। आज भी यह जितने मूल्य में जितनी सामग्री दे रहा है, दूसरी पत्रिकाओं के लिए यह असम्भव है। वास्तव में 'कल्याण' द्वारा इसके विशेषंको का ही मूल्य लिया जाता है, शेष साधारण 11 अंको के

मूल्य इसी में शामिल होते है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय कागज का मूल्य बढ़ जाने के परिणाम स्वरूप 'कल्याण' का मूल्य बढ़ा दिया गया। जब कागज का मूल्य कम हुआ तो 'कल्याण' ने भी अपना मूल्य घटा दिया।22 इस उदाहरण से स्पष्ट है कि लाभ कमाना 'कल्याण' का उद्देश्य नहीं रहा है।

9– पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' का योगदान

'कल्याण' एक ऐसी पत्रिका है जिसके माध्यम से आम जनता को प्राचीन भारतीय वागंमय का लोकातीत ज्ञान प्राप्त हो रहा है। 'कल्याण' ने भारतीय विषयों और तथ्यों के धार्मिक दृष्टिकोण को स्पष्ट और आकर्षक तरीके से लोगों के सामने रखा है। आज विज्ञापन–विहीन पत्रकारिता के जिस मॉडल पर चर्चा हो रही है, 'कल्याण' ने इसे पहले ही स्थापित कर दिखाया है।

इस प्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' के अवदान के निम्नलिखित बिन्दु सामने आते है :–

9.1– पत्रकारिता के क्षेत्र में अध्यात्म के आधार पर नैतिक मूल्यों का विस्तार करना।
9.2– नए परिवेश में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करना।
9.3– पत्रकारिता के क्षेत्र में नए आयामों के साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना करना।
9.4– अति आधुनिकता के कारण पारिवारिक मूल्यों को क्षरण से बचाने में।
9.5– सांस्कृतिक प्रवाह हेतु नए विकल्पों एवं उसके लिए नए सांस्कृतिक मार्गो की खोज करने में।
9.6– पत्रकारिता को मर्मस्पर्शी तथा प्रेरणादायी बनाने में।
9.7– आध्यात्मिकता को पत्रकारिता में प्रचलित करने में।
9.8– पत्रकारिता को मिशन के रूप में स्थापित कर लोगों को समाज के प्रति दायित्व बोध कराने में।
9.9– जन सामान्य के स्तर पर धर्म और अध्यात्म के प्रति रूचि पैदा करने में।
9.10– सस्ते मूल्य पर सर्वसुलभता से सर्वमंगल की कामना को धार्मिक स्वरुप प्रदान करने में।

10– डिजिटल मीडिया के दौर में 'कल्याण' की प्रासंगिकता

वर्तमान युग इलेक्ट्रानिक मीडिया और डिजिटल मीडिया का है। धार्मिक–आध्यात्मिक विषयों की लोकप्रियता के कारण ही आज अनेक धार्मिक चैनलों का प्रसारण हो रहा है। दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक 'रामायण' और 'महाभारत' की लोकप्रियता से शुरू हुआ सफर आज 24X7 वाले चैनलों तक पहुँच चुका है। इन्टरनेट पर तो हर प्रकार की सामग्री उपलब्ध है, धार्मिक–आध्यात्मिक सामग्री भी इसका अपवाद नही है।

यदि हम इस दौर में 'कल्याण' की स्थिति देखें तो पाते हैं कि पिछले दस वर्षो में 'कल्याण' के ग्राहकों की संख्या में गिरावट आयी है। 'कल्याण' के प्रथम वर्ष से अबतक की ग्राहकों की संख्या और मूल्य का प्रत्येक दस वर्ष के अन्तराल का आँकड़ा इस प्रकार है–

सारिणी–1

वर्ष		ग्राहक संख्या	मूल्य
1 (1926)	प्रथम अंक	1600	3/–
2 (1927)	प्रथम विशेषांक	11000	1/–
10 (1936)		34100	3/–
20 (1946)		101300	4/–
30 (1956)		121100	7.50/–
40 (1966)		150000	7.5/–
50 (1976)		175251	12/–
60 (1986)		163000	30/–
70 (1996)		225000	80/–
80 (2006)		230000	130/–
90 (2016) (वर्तमान)		215000	220/–

(प्रथम अंक का मूल्य वार्षिक है और प्रथम विशेषांक का मूल्य केवल विशषांक का है। इसके पश्चात् विशेषांक के मूल्य में ही वार्षिक मूल्य शामिल है। 1966 तक के आँकड़े 'भाई जी पावन स्मरण' से लिये गये हैं।)

इस सारिणी के अनुसार 80 वें वर्ष से अब तक के 89 वें वर्ष में ग्राहकों की संख्या में गिरावट दिखती है। वर्ष 80 (2006) में जहाँ ग्राहकों की संख्या 230000 थी वहीं 90 वें वर्ष (2016) में ये घट कर 215000 रह गई है। जबकि इसके मूल्य में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 'कल्याण' के ग्राहकों की संख्या में गिरावट पिछले दस वर्षो में ही आई है। पिछले दस वर्षो का आँकड़ा इस प्रकार है –

सारिणी–2

वर्ष	ग्राहक संख्या	मूल्य
80 (2006)	230000	150
81 (2007)	230000	150
82 (2008)	225000	170
83 (2009)	225000	170
84 (2010)	225000	170
85 (2011)	215000	190
86 (2012)	215000	190
87 (2013)	215000	200
88 (2014)	215000	220
90 (2016)	215000	220

(मूल्य सजिल्द अंकों के हैं।)

इस सारिणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि 80 वें और 81 वें वर्ष (2006 और 2007) में ग्राहक संख्या और मूल्य समान रहे। 82 वें वर्ष (2008) में ग्राहक संख्या में पहली बार 5000 की गिरावट दिखती है जो 83 वें और 84 वें वर्ष (2009 और 2010) तक स्थिर है। 85 वें वर्ष (2011) में पुनः 10000 ग्राहकों की कमी दिखती है। यह संख्या वर्तमान 90 वें वर्ष (2016) तक स्थिर है। इस अवधि में इसके मूल्य में भी बढ़ोत्तरी होती रही जो महत्वपूर्ण तो है परन्तु अस्वाभाविक नहीं।

11–लोकप्रियता में गिरावट के कारण

'कल्याण' की ग्राहक संख्या में कमी निश्चित रूप से इसकी लोकप्रियता में कमी की ओर संकेत करती हैं। 'कल्याण' के प्रबन्धक श्री धीरेन्द्र सिंह इसका कारण ये बताते हैं कि युवा वर्ग में इस पत्रिका को लेकर दिलचस्पी कम हो रही है और नए ग्राहक नहीं बन पा रहे हैं जबकि पुराने ग्राहकों की संख्या में विभिन्न कारणों से कमी आ रही है।

12–निष्कर्ष

'कल्याण' में प्रकाशित सामग्री के अध्ययन से पता चलता है कि पोद्दार जी के देहान्त के पश्चात् कुछ वर्षो को छोड़ दिया जाय तो इसमें नवीनता का अभाव दिखता है। इसके अतिरिक्त इसमें दिये जाने वाले उपदेश एवं शिक्षाएं बदलते समय के साथ तारतम्य नहीं स्थापित कर पा रहे हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कारण नयी इण्टरनेट पीढ़ी का किताबों के बजाय डिजिटल माध्यमों से ज्यादा जुड़ाव होना। इसी को ध्यान में रखते हुए 'कल्याण' ने वर्ष 2014 में अपना ऑनलाइन संस्करण भी शुरू किया है–kalyan-gitapress.org। यह निःशुल्क है, इसमें 2010 से प्रकाशित विशेषांक उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त इसमें वर्तमान सामान्य अंक भी पढ़े जा सकते हैं।

'कल्याण' के इतिहास में एक बार ऐसा भी समय आया था जबकि ग्राहकों की मांग न पूरा कर पाने के चलते नए ग्राहकों पर रोक लगा दी गयी थी।[23] परन्तु पिछले 10 वर्षो में इसकी ग्राहक संख्या में कमी आ रही है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले 10 वर्षो में डिजिटल मीडिया का प्रचलन बहुत बढ़ा है जिसके चलते सभी पत्र–पत्रिकाएं प्रभावित हुई हैं। 'कल्याण' भी इसका अपवाद नहीं है। परन्तु इस दौर में भी समाज में धर्म और अध्यात्म का प्रभाव कम नहीं हुआ है, बढ़ा ही है। यही बात 'कल्याण' की प्रासंगिकता को बनाए रखने में आशाजनक लगती है, भले ही मुद्रित संस्करण के बजाय ऑनलाइन संस्करण के माध्यम से।

संदर्भ

1.गुप्त, सदानन्द प्रसाद (वर्ष 2001, प्रथम संस्करण), हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ–35
2.सिंह डॉ भगवती प्रसाद, कविराज गोपीनाथ (वर्ष 2006, द्वितीय संस्करण), भाई जी : पावन स्मरण, गोरखपुर, गीतावाटिका प्रकाशन, पृष्ठ–584
3.चतुर्वेदी रजनीश कुमार (वर्ष 2010, प्रथम संस्करण) पत्रकारिता के युग निर्माता : हनुमान प्रसाद पोद्दार, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ–19
4.वही, पृष्ठ–17
5.वही
6.सिंह, भगवती प्रसाद (वर्ष 1980, प्रथम संस्करण), कल्याण पथ : निर्माता और राही, गोरखपुर, राधामाधव सेवा संस्थान, गीता वाटिका, पृष्ठ–480
7.पाण्डेय चन्द्रशेखर, (वर्ष 1991, प्रथम संस्करण) : संत हृदय : पोद्दार जी (सं0 राधेश्याम बंका), गोरखपुर, हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मारक समिति, गीतावाटिका, पृष्ठ–55
8.सिंह डॉ भगवती प्रसाद, कविराज गोपीनाथ (वर्ष 2006, द्वितीय संस्करण), भाई जी : पावन स्मरण, गोरखपुर, गीतावाटिका प्रकाशन, पृष्ठ–585
9.दुजारी गम्भीर चन्द, दुजारी श्यामसुन्दर, (वर्ष 2000. प्रथम संस्करण) श्री भाई जी–एक अलौकिक विभूति, गोरखपुर, गीतावाटिका प्रकाशन, पृष्ठ–228

10.'कल्याण' प्रथम वर्ष, प्रथम अंक (अगस्त 1926), वेंकटेश प्रेस, मुम्बई, पृष्ठ–2
11.सिंह, भगवती प्रसाद (वर्ष 1980, प्रथम संस्करण), कल्याण पथ : निर्माता और राही, गोरखपुर, राधामाधव सेवा संस्थान, गीता वाटिका,पृष्ठ–216
12.चतुर्वेदी, रजनीश कुमार (वर्ष 2006) पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' धार्मिक पत्रिका का योगदान (शोध प्रबन्ध), वाराणसी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, पृष्ठ– 312
13.गुप्त, सदानन्द प्रसाद, (वर्ष 2004, प्रथम संस्करण) संस्कृति का कल्पतरू : कल्याण, गोरखपुर, नीलकमल प्रकाशन, पृष्ठ–8
14.सिंह, भगवती प्रसाद (वर्ष 1980, प्रथम संस्करण), कल्याण पथ : निर्माता और राही, गोरखपुर, राधामाधव सेवा संस्थान, गीता वाटिका,पृष्ठ–215
15.'कल्याण', वर्ष 20, अंक 13, (अक्टूबर 1946), गोरखपुर, गीता प्रेस।
16. चतुर्वेदी, रजनीश कुमार (वर्ष 2006) पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' धार्मिक पत्रिका का योगदान (शोध प्रबन्ध), वाराणसी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, पृष्ठ–440
17.'कल्याण', वर्ष 13, अंक 1, श्रावण सं0 1995 (अगस्त 1938), गोरखपुर, गीता प्रेस।
18.'कल्याण' वर्ष 16, अंक 1, सौर श्रावण संवत् 1998 (अगस्त 1941), गोरखपुर, गीता प्रेस।
19.चतुर्वेदी, रजनीश कुमार (वर्ष 2006) पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' धार्मिक पत्रिका का योगदान (शोध प्रबन्ध), वाराणसी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, पृष्ठ– 89
20.सिंह, भगवती प्रसाद (वर्ष 1980, प्रथम संस्करण), कल्याण पथ : निर्माता और राही, गोरखपुर, राधामाधव सेवा संस्थान, गीता वाटिका,पृष्ठ–318
21.चतुर्वेदी, रजनीश कुमार (वर्ष 2006) पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कल्याण' धार्मिक पत्रिका का योगदान (शोध प्रबन्ध), वाराणसी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, पृष्ठ–433
22.वही, पृष्ठ–436
23.दुजारी गम्भीर चन्द, दुजारी श्यामसुन्दर, (वर्ष 2000. प्रथम संस्करण) श्री भाई जी–एक अलौकिक विभूति, गोरखपुर, गीतावाटिका प्रकाशन, पृष्ठ–81